देवरहा बाबा

http://hi.wikipedia.org/s/1itt

मुक्त ज्ञानकोश विकिपीडिया से

देवरहा बाबा, भारत के उत्तर प्रदेश के देवरिया जनपद में एक योगी, सिद्ध महापुरुष एवं सन्तपुरुष थे। डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद, महामना मदन मोहन मालवीय, पुरुषोत्तमदास टंडन, जैसी विभूतियों ने पूज्य देवरहा बाबा के समय-समय पर दर्शन कर अपने को कृतार्थ अनुभव किया था। पूज्य महर्षि पातंजलि द्वारा प्रतिपादित अष्टांग योग में पारंगत थे।

देवरहा बाबा

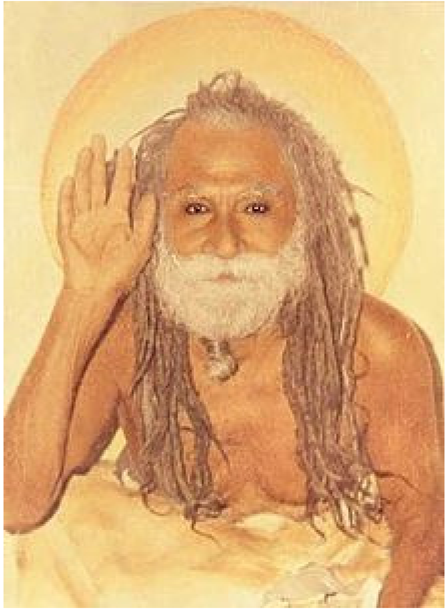

परम बाबा (उपदेश की मुद्रा में देवरहा बाबा)

Religion	सिध्द योगी संत
Temple	देवाराही मंदिर (देवरिया)
Personal	
Nationality	भारतीय
Born	देवरिया, उत्तर प्रदेश
Died	19 मई 1990[1] वृन्दावन, उत्तर प्रदेश
Resting place	वृन्दावन, उत्तर प्रदेश
Senior posting	
Based in	मेल चौरा
Religious career	
Post	पितृदेवता

अनुक्रम

- 1 जीवनी
  - 1.1 व्यक्तित्व
- 2 गणमान्य व्यक्ति भी झुकाते थे सिर
  - 2.1 बाबा की लीला
- 3 सन्दर्भ
- 4 बाहरी लिंक

जीवनी

देवरहा बाबा का जन्म अज्ञात है। यहाँ तक कि उनकी सही उम्र का आकलन भी नहीं है। वह यूपी के देवरिया जिले के रहने वाले थे। मंगलवार, 19 जून सन् 1990 को योगिनी एकादशी के दिन अपना प्राण त्यागने वाले इस बाबा के जन्म के बारे में संशय है। कहा जाता है कि वह करीब 900 साल तक जिन्दा थे। (बाबा के संपूर्ण जीवन के बारे में अलग-अलग मत है, कुछ लोग उनका जीवन 250 साल तो कुछ लोग 500 साल मानते हैं।)

कुंभ कैंपस में संगम तट पर धुनि रमाए बाबा की करीब 10 सालों तक सेवा करने वाले मार्कण्डेय महराज के मुताबिक, पूरे जीवन निर्वस्त्र रहने वाले बाबा धरती से 12 फुट उंचे लकड़ी से बने बॉक्स में रहते थे। वह नीचे केवल सुबह के समय स्नान करने के लिए आते थे। इनके भक्त पूरी दुनिया में फैले हैं। राजनेता, फिल्मी सितारे और बड़े-बड़े अधिकारी उनके शरण में रहते थे।

हिमालय में अनेक वर्षों तक अज्ञात रूप में रहकर उन्होंने साधना की। वहां से वे पूर्वी उत्तर प्रदेश के देवरिया नामक स्थान पर पहुंचे। वहां वर्षों निवास करने के कारण उनका नाम "देवरहा बाबा" पड़ा। देवरहा बाबा ने देवरिया जनपद के सलेमपुर तहसील में मइल (एक छोटा शहर) से लगभग एक कोस की दूरी पर सरयू नदी के किनारे एक मचान पर अपना डेरा डाल दिया और धर्म-कर्म करने लगे।

देवरहा बाबा परंम् रामभक्त थे, देवरहा बाबा के मुख में सदा राम नाम का वास था, वो भक्तो को राम मंत्र की दीक्षा दिया करते थे। वो सदा सरयू के किनारे रहा करते थे। उनका कहना था :-

"एक लकड़ी ह्रदय को मानो दूसर राम नाम पहिचानो
राम नाम नित उर पे मारो ब्रह्म दिखे संशय न जानो "।

देवरहा बाबा जनसेवा तथा गोसेवा को सर्वोपरि-धर्म मानते थे तथा प्रत्येक दर्शनार्थी को लोगों की सेवा, गोमाता की रक्षा करने तथा भगवान की भक्ति में रत रहने की प्रेरणा देते थे।

देवरहा बाबा श्री राम और श्री कृष्ण को एक मानते थे और भक्तो को कष्ट से मुक्ति के लिए कृष्ण मंत्र भी देते थे।

"ऊं कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने
प्रणत: क्लेश नाशाय, गोविन्दाय नमो-नम:"।

बाबा कहते थे-"जीवन को पवित्र बनाए बिना, ईमानदारी, सात्विकता-सरसता के बिना भगवान की कृपा प्राप्त नहीं होती। अत: सबसे पहले अपने जीवन को शुद्ध-पवित्र बनाने का संकल्प लो। वे प्राय: गंगा या यमुना तट पर बनी घास-फूस की मचान पर रहकर साधना किया करते थे। दर्शनार्थ आने वाले भक्तजनों को वे सद्मार्ग पर चलते हुए अपना मानव जीवन सफल करने का आशीर्वाद देते थे। वे कहते, "इस भारतभूमि की दिव्यता का यह प्रमाण है कि इसमें भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण ने अवतार लिया है। यह देवभूमि है, इसकी सेवा, रक्षा तथा संवर्धन करना प्रत्येक भारतवासी का कर्तव्य है।"

प्रयागराज में सन् 1989 में महाकुंभ के पावन पर्व पर विश्व हिन्दू परिषद् के मंच से बाबा ने अपना पावन संदेश देते हुए कहा था-"दिव्यभूमि भारत की समृद्धि गोरक्षा, गोसेवा के बिना संभव नहीं होगी। गोहत्या का कलंक मिटाना अत्यावश्यक है।"

पूज्य बाबा ने योग विद्या के जिज्ञासुओं को हठयोग की दसों मुद्राओं का प्रशिक्षण दिया। वे ध्यान योग, नाद योग, लय योग, प्राणायाम, त्राटक, ध्यान, धारणा, समाधि आदि की साधन पद्धतियों का जब विवेचन करते तो बड़े-बड़े धर्माचार्य उनके योग सम्बंधी ज्ञान के समक्ष नतमस्तक हो जाते थे।

बाबा ने भगवान श्रीकृष्ण की लीला भूमि वृन्दावन में यमुना तट पर स्थित मचान पर चार वर्ष तक साधना की। सन् 1990 की योगिनी एकादशी (19 जून) के पावन दिन उन्होंने निर्वाण प्राप्त किया।

व्यक्तित्व

बहुत ही कम समय में देवरहा बाबा अपने कर्म एवं व्यक्तित्व से एक सिद्ध महापुरुष के रूप में प्रसिद्ध हो गए। बाबा के दर्शन के लिए प्रतिदिन विशाल जन समूह उमड़ने लगा तथा बाबा के सानिध्य में शांति और आनन्द पाने लगा। बाबा श्रद्धालुओं को योग और साधना के साथ-साथ ज्ञान की बातें बताने लगे। बाबा का जीवन सादा और एकदम संन्यासी था। बाबा भोर में ही स्नान आदि से निवृत्त होकर ईश्वर ध्यान में लीन हो जाते थे और मचान पर आसीन होकर श्रद्धालुओं को दर्शन देते और ज्ञानलाभ कराते थे। कुंभ मेले के दौरान बाबा अलग-अलग जगहों पर प्रवास किया करते थे। गंगा-यमुना के तट पर उनका मंच लगता था। वह 1-1 महीने दोनों के किनारे रहते थे। जमीन से कई फीट ऊंचे स्थान पर बैठकर वह लोगों को आशीर्वाद दिया करते थे। बाबा सभी के मन की बातें जान लेते थे। उन्होंने पूरे जीवन कुछ नहीं खाया। सिर्फ दूध और शहद पीकर जीते थे। श्रीफल का रस उन्हें बहुत पसंद था।

गणमान्य व्यक्ति भी झुकाते थे सिर

देवराहा बाबा के भक्तों में कई बड़े लोगों का नाम शुमार है। राजेंद्र प्रसाद, इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, अटल बिहारी वाजपेयी, लालू प्रसाद यादव, मुलायम सिंह यादव और कमलापति त्रिपाठी जैसे राजनेता हर समस्या के समाधान के लिए बाबा की शरण में आते थे। देश में आपातकाल के बाद हुए चुनावों में जब इंदिरा गाँधी हार गईं तो वह भी देवराहा बाबा से आशीर्वाद लेने गयीं उन्होंने अपने हाथ के पंजे से उन्हें आशीर्वाद दिया तभी से कांग्रेस का चुनाव चिह्न हाथ का पंजा है। फलस्वरूप १९८० में एक बार फिर वह प्रचंड बहुमत के साथ देश की प्रधानमंत्री बनीं।

बाबा की लीला

श्रद्धालुओं के कथनानुसार बाबा अपने पास आने वाले प्रत्येक व्यक्ति से बड़े प्रेम से मिलते थे और सबको कुछ न कुछ प्रसाद अवश्य देते थे। प्रसाद देने के लिए बाबा अपना हाथ ऐसे ही मचान के खाली भाग में रखते थे और उनके हाथ में फल, मेवे या कुछ अन्य खाद्य पदार्थ आ जाते थे जबकि मचान पर ऐसी कोई भी वस्तु नहीं रहती थी। श्रद्धालुओं को कौतुहल होता था कि आखिर यह प्रसाद बाबा के हाथ में कहाँ से और कैसे आता है। जनश्रूति के मुताबिक, वह खेचरी मुद्रा की वजह से आवागमन से कहीं भी कभी भी चले जाते थे। उनके आस-पास उगने वाले बबूल के पेड़ों में कांटे नहीं होते थे। चारों तरफ सुंगध ही सुंगध होता था।

लोगों में विश्वास है कि बाबा जल पर चलते भी थे और अपने किसी भी गंतव्य स्थान पर जाने के लिए उन्होंने कभी भी सवारी नहीं की और ना ही उन्हें कभी किसी सवारी से कहीं जाते हुए देखा गया। बाबा हर साल कुंभ के समय प्रयाग आते थे। मार्कण्डेय सिंह के मुताबिक, वह किसी महिला के गर्भ से नहीं बल्कि पानी से अवतरित हुए थे। यमुना के किनारे वृन्दावन में वह 30 मिनट तक पानी में बिना सांस लिए रह सकते थे। उनको जानवरों की भाषा समझ में आती थी। खतरनाक जंगली जानवारों को वह पल भर में काबू कर लेते थे।

लोगों का मानना है कि बाबा को सब पता रहता था कि कब, कौन, कहाँ उनके बारे में चर्चा हुई। वह अवतारी व्यक्ति थे। उनका जीवन बहुत सरल और सौम्य था। वह फोटो कैमरे और टीवी जैसी चीजों को देख अचंभित रह जाते थे। वह उनसे अपनी फोटो लेने के लिए कहते थे, लेकिन आश्चर्य की बात यह थी कि उनका फोटो नहीं बनता था। वह नहीं चाहते तो रिवाल्वर से गोली नहीं चलती थी। उनका निर्जीव वस्तुओं पर नियंत्रण था।

सन्दर्भ

1. ↑ "Baba in the report who makes Congress squirm" (http://www.indianexpress.com/news/baba-in-the-report-who-makes-congress-squirm/551370/0). *The Indian Express*. 8 दिसम्बर 2009. http://www.indianexpress.com/news/baba-in-the-report-who-makes-congress-squirm/551370/0. अभिगमन तिथि: 20 दिसम्बर 2012.

बाहरी लिंक

- Website about Devraha Baba (http://devraha.org/)
- Story about Devraha Baba (http://www.amazingabilities.com/amaze7a.html)

"http://hi.wikipedia.org/w/index.php?title=देवरहा_बाबा&oldid=2560475" से लिया गया

श्रेणियाँ: व्यक्तित्व | हिंदू संत | मथुरा

- अन्तिम परिवर्तन 13:21, 22 सितंबर 2014।
- यह सामग्री क्रियेटिव कॉमन्स ऍट्रीब्यूशन/शेयर-अलाइक लाइसेंस के तहत उपलब्ध है; अन्य शर्तें लागू हो सकती हैं। विस्तार से जानकारी हेतु देखें उपयोग की शर्तें

Devraha Baba

Devraha Baba (died in 19 May 1990), also spelled **Deoraha baba**[2] was an Indian Siddha Yogi saint who lived beside the Yamuna river in Mathura. He was known as “ageless Yogi with a secular image”.[3] He was known as a sadhu who preached harmony between religious communities.[4]

1 Life

Little is known about the early life of Devraha Baba, beyond that in the first half of 20th-century, he visited Mael, a town 20 km. south west of Salempur, Uttar Pradesh. Here he started living atop a *Machan*, a high platform made of wooden logs, situated 3 km from the town on the banks of Sarayu river. The place was near Dewar in Deoria district, thus local people started calling him Devraha Baba or Deoria Baba, with *Baba* being an honorific for saints or old men. Thereafter he shifted to Vrindavan, where again he lived atop a machan on the banks of Yamuna river for the rest of his years.[5][6]

Devraha Baba was a hermit from Vrindava.[7] He was considered to be a “spiritual guide to everyone from a pauper to the most powerful ... above narrow confines of caste and community.”[3] Village people as well as important personalities waited for hours to have a glimpse or *darshan* of him.[8] He received visits from politicians seeking his blessings at the time of general elections, including Indira Gandhi, Buta Singh,[8] and Rajiv Gandhi.[9] Rajiv Gandhi and his wife Sonia Gandhi visited his ashram on the eve of the 1989 elections.[10] He used to bless the devotees with his feet.[11]

He lived on a 12-foot-high (3.7 m) wooden platform near the river and wore a small deerskin.[12] A barricade of wooden planks hid his semi-naked body from his devotees, and he came down only to bathe in the river.[13]

1.1 Longevity claims

There are various claims of his longevity, starting from 150 years and above[8][9] but verifiable records are not available. He was called “ageless Yogi with a secular image”.[3] BBC correspondent Mark Tully observed that local people believed Baba died only when he wished to.[12]

2 Association with the demolition of the Babri Masjid

Devraha Baba’s name was included by the Liberhan Commission on the list of those accused of demolishing the Babri Masjid, even though he died two years before the demolition of the structure.[3] Pro-Hindu organisations like Vishwa Hindu Parishad had been successful in persuading Devraha Baba to support their cause of building a Ram temple at Ayodhya, and indeed as a harmonious, joint effort between the various religious groups.[12] Tully also observed that some of Devraha Baba’s devotees approached him for financial as well as political gains.[12]

3 Notes

[1] “Baba in the report who makes Congress squirm”. *The Indian Express*. 8 December 2009. Retrieved 20 December 2012.

[2] Lutgendorf, Philip p.296

[3] “Devraha Baba’s indictment enrages seers in Ayodhya”. *The Times of India*. 2 December 2009. Retrieved 18 December 2012.

[4] Subrata Kumar Mitra,, James Chiriyankandath (1992). *Electoral politics in India: a changing landscape*. New Delhi: Segment Books. p. 46.

[5] “Personalities: Devraha Baba”. Deoria district official website. Retrieved 2014-05-10.

[6] Cohen, Lawrence, p.284

[7] Jaffrelot, Christophe (2010). *Religion, caste, and politics in India*. New Delhi: Primus Books. p. 240. ISBN 9789380607047.

[8] Cohen Lawrence p.283-5

[9] Dasgupta, Swapan (11 Friday 2006). “BEYOND THE OLD BOOKS — Modern India and the discourse of faith”. *The Telegraph (Calcutta)*. Retrieved 19 December 2012. Check date values in: |date= (help)

[10] Kidwai, Rasheed (2003). *Sonia, a biography*. New Delhi: Penguin Books India. p. 131.

[11] Christophe Jaffrelot, edited by Jacob Copeman, Aya Ikegame (2012). *The Guru in South Asia: New Interdisciplinary Perspectives*. New York and Oxon: Routledge. p. 83. ISBN 9781136298066.

[12] Mark Tully, edited by Dom Moraes (2004). *The Penguin book of Indian journeys*. New Delhi: Penguin India. pp. 101–105. ISBN 9780141007649.

[13] Crossette, Barbara (November 22, 1989). "India to Begin Voting ; Today on Fate of the Nation and the House of Nehru". *The New York Times*.

4 References

- Cohen, Lawrence (2000). *No Aging in India: Alzheimer's, The Bad Family, and Other Modern Things* (2000 ed.). University of California Press. ISBN 0-520-22462-0. - Total pages: 367
- Lutgendorf, Philip (2007). *Hanuman's tale: the messages of a divine monkey* (2007 ed.). Oxford University Press. ISBN 0-19-530921-9. - Total pages: 434
- Rama, Swami (1978). *Living with the Himalayan masters: spiritual experiences of Swami Rama* (1978 ed.). Himalayan International Institute of Yoga Sciences & Philosophy. - Total pages: 490

5 External links

- Website about Devraha Baba
- Story about Devraha Baba

6 Text and image sources, contributors, and licenses

6.1 Text

- **Devraha Baba** *Source:* http://en.wikipedia.org/wiki/Devraha%20Baba?oldid=636568630 *Contributors:* Paul Barlow, Bearcat, Discospinster, MBisanz, Smors, Sylvainremy, BD2412, TheRingess, John Z, Priyanath, Wknight94, Closedmouth, SmackBot, C.Fred, Timotheus Canens, Chris the speller, Kittybrewster, Huon, Cydebot, Lugnuts, Dougweller, הסרפד, Esemono, Dawkeye, Ekabhishek, Jevansen, Redtigerxyz, VolkovBot, Gabal, Wuhwuzdat, Stevenredd, Polyamorph, John J. Bulten, Rayabhari, Vanished user tj23rpoij4tikkd, XLinkBot, Dthomsen8, Addbot, Yobot, Fraggle81, Yngvadottir, AnomieBOT, Materialscientist, LilHelpa, Alumnum, Ganesh J. Acharya, Mewulwe, Hornlitz, Mean as custard, RjwilmsiBot, Kidohdin, Andris384, Sgerbic, Aavindraa, H3llBot, Puffin, ClueBot NG, Cntras, Microdharam, Jdperkins, Anpr22, Helpful Pixie Bot, Titodutta, Dochmel, Tlbtc, Sudeept19, Sudhir kumar garhwal, Anbu121, Latheist, Lugia2453, Siravneetsingh, Sonphan the Great, Amarendras, Youngmoneymike, Ananya Anant and Anonymous: 62

6.2 Images

6.3 Content license

- Creative Commons Attribution-Share Alike 3.0

IN 1981, LEONARD [ORR] visited the yogi, Devaraha Baba. He was over four hundred years young and lived in Vrindaban, India. He was well known. He lived in a hut by the river, and temple priests would take visitors to him. He considered himself a child yogi. He had an unusual lifestyle; he moved four times a year. His usual places of residence were Bombay, Vrindaban, Benares and Simla.

When Leonard asked him the secrets to two things: One, the continuous practice of God's presence by the remembrance of God's name, Om Namaha Shiviaya. Second, stay away from people (Leonard interpreted this to be, stay away from mortals because of energy pollution). When Leonard met him, he was living in a hut by the river a mile away from anyone else. At his request, people receiving his darshan were instructed to sit fifty yards away. Devaraha Baba taught Leonard the valuable lesson that we must monitor people's energy in our lives. Leonard verified this lesson over the years with experience, and with Babaji's example many, many times. Devaraha Baba, was the most visible of Leonard's immortal friends. Leonard always sent people to him, especially if this was their first time meeting an immortal yogi. He died in 1993…. Basically, Devarah Baba died because he stopped learning.

Churchill, Pola (2007-11-14). *Eternal Breath : A Biography of Leonard Orr Founder of Rebirthing Breathwork* (Kindle Locations 4825-4829). Trafford. Kindle Edition.